माँ तुतला भवानी मंदिर, तिलौथू, रोहतास

रोहतास जिले के तिलौथू प्रखंड में पश्चिम कैमूर पहाड़ी की घाटी में स्थित यह मंदिर 900 साल से भी अधिक पुराना है। फ्रांसिसी इतिहासकार बुकानन ने अपने यात्रा वृत्तांत में इस मंदिर का उल्लेख किया है। मंदिर में माँ तुतला भवानी की दो प्रतिमाएँ हैं जिनमें एक पुरानी और खंडित है जबकि दूसरी नई है। यहाँ उपलब्ध एक शिलालेख के अनुसार नई प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा खरवार के राजा धवल प्रताप देव ने 19 अप्रैल 1158 ई0 में की थी। मंदिर के आस-पास कई शिलालेख उपलब्ध हैं। इतिहासकारों के अनुसार पुराना 8वीं सदी का शिलालेख शारदा लिपी में है जिसे आज तक पढ़ा नहीं जा सका है। 120 फीट की ऊँचाई से गिरने वाला तुतला भवानी जलप्रपात इस मंदिर को अलौकिक बनाता है।

माँ चंडिका स्थान, मुंगेर

मुंगेर जिला मुख्यालय के समीप स्थित माँ चंडिका स्थान एक प्रमुख शक्तिपीठ है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ माता सती की बाईं आँख गिरी थी। इस मंदिर को महाभारत काल से भी जोड़ा जाता है। माँ चंडिका के परम भक्त अंगराज कर्ण प्रतिदिन माता के सामने खौलते हुए तेल की कड़ाही में स्नान करते थे, जिससे माता प्रसन्न होकर उन्हें जीवनदान और सवा मन सोना देती थीं जिसे राजा कर्ण अपनी प्रजा में बाँट देते थे। नवरात्र के अवसर पर यहाँ लाखों की संख्या में श्रद्धालु माता के दर्शन को आते हैं।

माँ छिन्नमस्तिका मंदिर, काँटी, मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरपुर के काँटी प्रखण्ड में स्थित यह मंदिर भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने के लिए जाना जाता है। श्रद्धालु अपनी मनोकामना पूर्ण होने के पश्चात् नारियल एवं पायल छिन्नमस्तिका माता को अर्पण करते हैं। यहाँ नेपाल समेत देश के अन्य हिस्सों से लाखों श्रद्धालु आते है। अमावस्या पर दक्षिण भारत से बड़ी संख्या में साधक आते हैं।

माँ त्रिपुरसुंदरी, बड़हिया, लखीसराय

लखीसराय के बड़हिया गाँव में माँ वैष्णो देवी का अंश माँ त्रिपुरसुंदरी अपने बाल रूप में विराजती हैं। मान्यता के अनुसार जो व्यक्ति वैष्णो देवी नहीं जा सकते, उन्हें यहाँ दर्शन करने पर पूर्ण फल की प्राप्ति होती है।

इसके अतिरिक्त बिहार में कुछ अन्य महत्वपूर्ण शक्ति मंदिर भी हैं जैसे-

माँ पूरणदेवी मंदिर, पूर्णिया • माँ श्यामाकाली मंदिर, दरभंगा • माँ उच्चैठ स्थान मंदिर, मधुबनी • माँ रक्त काली मत्स्यगंधा, सहरसा • माँ मंगलागौरी मंदिर, गया

BIHAR TOURISM Blissful Bihar

Department of Tourism, Government of Bihar
Old Secretariat, Patna - 800015, Bihar (India)
Tel. : +91-612-2217045
Email : dir-tourism-bih@nic.in
Website: https://tourism.bihar.gov.in/

BIHAR TOURISM Blissful Bihar

बिहार के शक्ति स्थल

ॐ सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्रयंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।।

बिहार अनेक धर्मों का संगम स्थल है। प्राचीन काल से यहाँ बौद्ध, सिख, हिन्दु तथा सूफी धाराओं के प्रार्थना स्थल मौजूद हैं। सनातन धर्म मानने वालों के लिए यहाँ प्राचीन एवं अलौकिक शक्ति स्थल हैं जिनमें से कुछ हजारों साल पुराने हैं। वेदों-पुराणों में सुख, समृद्धि, साहस, सेहत, बुद्धि, विजय आदि के लिए आदिशक्ति अथवा दुर्गा की उपासना को सर्वोत्तम माना गया है।

विद्या समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः सतस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमत्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा पराक्ति।।
(मार्कण्डेयपुराण)

अर्थात् संसार की सारी विद्याएँ, कलाएँ और कौशल आदिशक्ति के कारण ही हैं और संसार की सभी स्त्रियाँ आदिशक्ति का स्वरूप हैं। दुनिया में सबसे शक्तिशाली देवी हैं।

बिहार के शक्तिस्थलों एवं सिद्धपीठों पर लाखों श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं तथा अपनी मन्नतों को पूरा करने का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इन शक्तिस्थलों में ख़ास तौर पर नवरात्र के समय पूजा-अर्चन का विशेष महत्त्व है।

बड़ी पटनदेवी, पटना

समस्त भारतभूमि के 51 शक्तिपीठों में से यह एक है। देवी भागवत और तंत्र चूड़ामणि के अनुसार यहाँ पर सती की दाहिनी जंघा गिरी थी। यहाँ महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती तीनों एक साथ विराजमान हैं। इन्हें पटना नगर की संरक्षिका के रूप में भी पूजा जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह मंदिर सम्राट अशोक के शासन काल के पहले से मौजूद है। यहाँ वाम मार्गी व दक्षिणी मार्गी पूजा का विधान है।

माँ मुण्डेश्वरी धाम, कैमूर

कैमूर की पावरा पहाड़ी पर स्थित, 8वीं सदी में निर्मित यह मंदिर भारत का सबसे प्राचीन क्रियाशील मंदिर है। यह अष्टकोणीय मंदिर भगवान शिव और शक्ति को समर्पित है। ऐसा माना जाता है कि चंड नामक राक्षस के वध के बाद देवी ने यहीं मुंड नामक राक्षस का वध किया था। **यहाँ माता रक्त की बलि नहीं लेती हैं अपितु यहाँ सात्विक बलि की प्रथा है।**

माँ थावेभवानी, थावे, गोपालगंज

लगभग 400 साल पुराना यह सिद्धपीठ भक्त के बुलाने पर माता के प्रकट होने की असीम आस्था का प्रतीक है। इस मंदिर में हथुआ महाराज द्वारा अपनी कुलदेवी की पूजा की जाती है। ऐसा माना जाता है कि राजा मनन सिंह के राज में भयंकर अकाल पड़ा था। थावे में कामाख्या देवी का भक्त रहषु रहता था, जो दिन में घास काटता था और रात में माँ की कृपा से बाघों को जोत कर दौनी कर घास से अन्न निकालकर लोगों को देता था। राजा को विश्वास नहीं हुआ तो उन्होंने रहषु से देवीमाँ को बुलाने को कहा और ऐसा ना करने पर सजा देने की बात कही। रहषु की प्रार्थना पर माँ भवानी कामाख्या से चल कर थावे पहुँचीं और रहषु का मस्तक फाड़कर कंगन युक्त हाथ के दर्शन दिये। देखते ही देखते राजा के सभी महल ध्वस्त हो गये तथा राजा की भी मौत हो गई। माँ थावे भवानी मंदिर के समीप ही रहषु का मंदिर है। भक्त रहषु के दर्शन बिना माँ थावे भवानी की पूजा अधूरी मानी जाती है।

माँ कात्यायनी मंदिर, रोहियार, चौथम, खगड़िया

महर्षि कात्यायन की कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर माँ दुर्गा ने इनके यहाँ पुत्री के रूप में जन्म लिया अतएव कात्यायनी नाम से प्रसिद्ध हुई। खगड़िया जिले में माता कात्यायनी के इस प्रसिद्ध मंदिर के साथ एक कहानी जुड़ी हुई है। सैकड़ों वर्ष पूर्व बाबा श्रीपद की गाय रोज एक निश्चित जगह पर दूध गिराकर लौट आती थी। एक दिन बाबा ने गाय का पीछा करते हुए यह देखा तथा इसके बाद अन्य गायों ने भी दूध का चढ़ावा शुरू किया। इसी जगह पर माता कात्यायनी का आज भव्य मंदिर है।

माँ उग्रतारा, महिषी, सहरसा

सहरसा में धर्ममूला नदी के किनारे महिषी गाँव में स्थित माँ उग्रतारा का मंदिर तंत्र साधना का महत्वपूर्ण केन्द्र है। यहाँ माता की प्रतिमा कई रूपों में दिखाई पड़ती है। सुबह अलसायी हुयी, दोपहर में रौद्र एवं शाम में माँ का सौम्य रूप दिखता है। ऐसा माना जाता है कि महर्षि वशिष्ठ कठिन तपस्या कर माँ भगवती को सशर्त एवं सदेह यहाँ लाये थे। कालांतर में शर्त भंग होने के कारण माँ भगवती तारा पाषाण रूप में परिवर्तित हो गईं तथा इन्हें उग्रतारा नाम मिला।

माँ अम्बिका भवानी (आमी स्थान), छपरा

यह सिद्धपीठ शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त करने एवं अभिलाषा पूर्ण होने का स्थान है, जहाँ राजा सूरथ शत्रुओं से पराजित होकर एवं वैश्य समाधि अपने पुत्रों से अपमानित होकर समान दुख की अवस्था में पहुँचे थे। मेधा ऋषि के आदेश पर यहाँ मिट्टी की प्रतिमा बनाकर देवी की आराधना करने से उनके दुखों का नाश हुआ। यहाँ से वैद्यनाथ धाम, विश्वनाथ धाम एवं पशुपतिनाथ की दूरी लगभग समान है।

माँ ताराचंडी, सासाराम, रोहतास

सासाराम से 5 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़, झरने एवं हरियाली के बीच स्थित इस मंदिर का अद्भुत आकर्षण है। ऐसा माना जाता है कि इस स्थान पर माता सती की दाहिनी आँख गिरी थी। मंदिर के शिलालेख से ज्ञात होता है कि 11वीं सदी में भी यह देश के विख्यात शक्तिस्थलों में से एक था। महर्षि विश्वामित्र ने इसका नाम तारापीठ रखा था। यहीं पर भगवान परशुराम ने सहस्त्रबाहु को पराजित कर माँ तारा की उपासना की थी। माँ तारा द्वारा चंड नामक राक्षस के वध के कारण यह पीठ ताराचंडी कहलाया। मंदिर के गर्भगृह के निकट 1229 ई0 के खरवार के राजा प्रताप धवलदेव की ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख से इस मंदिर की प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता का पता चलता है।

माँ आरण्य देवी, आरा

आरा जिले में स्थित इस मंदिर के नाम पर ही आरा शहर का नाम पड़ा है। इस मंदिर का इतिहास रामायण एवं महाभारत काल से जुड़ा है। रामायण काल में महर्षि विश्वामित्र भगवान राम व लक्ष्मण के साथ धनुष यज्ञ के लिए जनकपुर जा रहे थे, तब उन्होंने यहाँ पूजा अर्चना की थी। प्राचीन काल में इस मंदिर के आस-पास वन (अरण्य) था, जहाँ पांडव वनवास के क्रम में ठहरे थे। धर्मराज युधिष्ठिर ने यहाँ माँ आरण्य देवी की प्रतिमा स्थापित कर उनकी पूजा अर्चना की थी।